अनन्त आशीर्वादों का समय

भगवान नित्यानन्द की पुण्यतिथि

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

सिद्धयोग पथ पर अगस्त माह के अपने परिचय में मैंने बताया था कि गुरुमाई जी ने इस माह के केन्द्रण के रूप में, ध्यान व मन्त्र-जप के अभ्यास दिए हैं। अतः, हम देख सकते हैं कि यह केन्द्रण और अगस्त माह में आने वाला सिद्धयोग का हरेक पर्व, आपस में किस तरह से जुड़े हुए हैं।

इनमें से पहला पर्व है, भगवान नित्यानन्द की पुण्यतिथि। सौर कैलेण्डर के अनुसार, बड़े बाबा की पुण्यतिथि ८ अगस्त को है और उनकी चान्द्र पुण्यतिथि उसके अगले दिन, यानी ९ अगस्त को [भारत में १० अगस्त को] है। जैसा कि मैंने परिचय में बताया था, बड़े बाबा की पुण्यतिथि उनके ब्रह्मलीन होने की बरसी है, वह दिन जब सन् १९६१ में वे अपनी भौतिक देह का त्याग कर परमचिति में लय हो गए थे। विवेकचूडामणि नामक ग्रन्थ में, महान ऋषि आदि शंकराचार्य जी ने एक उपमा दी है जो अधिक स्पष्टता से यह समझने में हमारी सहायता कर सकती है कि एक आत्मसाक्षात्कारी विभूति के देहत्याग का क्या अर्थ है। आदि शंकराचार्य जी कहते हैं :

> जब एक मिट्टी का घड़ा टूटता है तो घड़े के अन्दर का आकाश, बाहर के अनन्त आकाश के साथ एक हो जाता है। इसी प्रकार, जब बाहरी रूप का विलय हो जाता है, तब ब्रह्म को जानने वाला स्वयं ब्रह्म ही हो जाता है।[१]

बड़े बाबा हमारे जगत में व्याप्त परम चेतना के साथ एकाकार थे, एकाकार हैं और सदैव एकाकार रहेंगे। देह नश्वर हो सकती है; परन्तु गुरु-शक्ति नहीं। यही कारण है कि पैंसठ वर्ष बाद आज भी, बड़े बाबा की उपस्थिति, उनके आशीर्वाद इतनी जीवन्तता से हमारे साथ बने हुए हैं। [यह जानने के लिए कि भारतीय परम्परा में व सिद्धयोग पथ पर हम एक महान आत्मा की पुण्यतिथि का सम्मान क्यों करते हैं, मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि आप वेबसाइट पर दी गई, इस विषय से जुड़ी व्याख्या को पढ़ें जिसका शीर्षक है : 'पुण्यतिथि : एक जन्मसिद्ध के अवतरण का सम्मान'।]

जब मैं बड़े बाबा के बारे में विचार करती हूँ, विशेषकर उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर तो मेरा मन अकसर गुरुमाई जी की उस सुन्दर कविता की ओर आकृष्ट होता है, जिसका शीर्षक है, 'एक मन्दिर निराकार'। इस कविता में गुरुमाई जी कहती हैं कि समस्त ब्रह्माण्ड बड़े बाबा का मन्दिर है—और

यह भी कि उदाहरण के लिए, हम प्रकृति के सौन्दर्य में बड़े बाबा के दर्शन कर सकते हैं। गुरुमाई जी समझाती हैं कि ऐसा करना "खुले नेत्रों से ध्यान करना है।"

मुझे याद है, जब मैंने गुरुमाई जी की यह कविता पहली बार पढ़ी थी तो मैं विस्मयविमुग्ध हो गई थी। इस कविता ने मेरी इस समझ को और विस्तृत किया कि बड़े बाबा कौन हैं और कौन थे, साथ ही, इसने मेरे बोध को भी विकसित किया कि सिद्धयोग ध्यान क्या हो सकता है। यह एक ऐसा अभ्यास है जिसे करने के लिए हमें अपने संसार से विमुख होने की आवश्यकता नहीं है। हम इसी संसार में रहते हुए और इसके बीच रहकर ध्यान कर सकते हैं, वस्तुतः इससे, ध्यान के हमारे अभ्यास को *प्रेरणा* मिल सकती है। अपनी कविता में गुरुमाई जी ने प्रकृति में विद्यमान अनेकानेक चीज़ों के साथ-साथ, मानवरचित चीज़ों के भी उदाहरण दिए हैं जिनके माध्यम से हम बड़े बाबा की उपस्थिति के साथ जुड़ सकते हैं। इन सभी चीज़ों में हमें एक आधारभूत चेतना की अनुभूति हो सकती है, उसी शक्ति की अनुभूति जिसे हम ध्यान में खोजते हैं और जिसके साथ जुड़ने का प्रयत्न करते हैं।

निस्सन्देह, संसार को इस दृष्टिकोण से देखने के लिए थोड़ा प्रयत्न करना पड़ सकता है—ध्वनि में विद्यमान मौन को सुनने और क्रियाकलाप के मूल में बसी प्रशान्ति को पहचानने के लिए। इसी कारण, यह हमारा महान सद्भाग्य है कि सिद्धयोग पथ पर श्रीगुरु ने हमें इस बोध तक पहुँचने का प्रत्यक्ष साधन प्रदान किया है। हमें 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र प्रदान किया गया है।

जो भी जिज्ञासु बड़े बाबा के पास आते, उन्हें वे यह मन्त्र प्रदान करते थे। यह बात सुप्रसिद्ध है कि बड़े बाबा द्वारा मन्त्र प्रदान किए जाने पर ही बाबा मुक्तानन्द को शक्तिपात दीक्षा प्राप्त हुई थी। बड़े बाबा ने सिखाया कि मन्त्र-जप करने के अनेकानेक फलों में से एक है, ऐक्य की अनुभूति—यानी, भगवान के साथ ऐक्य, श्रीगुरु के साथ ऐक्य, व्यक्ति के बाह्य व आन्तरिक जगत के बीच ऐक्य।

मन्त्र-जप के बारे में जो बात मुझे सबसे अधिक प्रिय है, वह यह है कि हम इस अभ्यास को वस्तुतः कहीं भी कर सकते हैं। और अकसर ऐसा होता है कि जब मैं मन्त्र को *अपने साथ* बनाए रखती हूँ, यानी जब मैं इसे याद रखती हूँ और अपने दैनिक कार्यों को करते हुए इसे जपती रहती हूँ तो मुझे उस ऐक्य की झलक मिलती रहती है जिसके बारे में बड़े बाबा बताते हैं। उदाहरण के लिए, मैं विचार कर रही हूँ कि गुरुमाई जी ने हमें 'जप-वॉक' करने, यानी जप करते हुए टहलने के लिए प्रोत्साहित किया है। यहाँ तक कि उन्होंने हमें आमन्त्रित किया है कि हम भी सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के माध्यम से *उनके* साथ जप-वॉक पर चलें! मैंने महसूस किया है कि चलते समय मन ही मन मन्त्र-जप करने से, अन्ततः मुझे ऐसा लगने लगता है मानो मन्त्र उद्भूत हो रहा हो, हर कहीं

से *और* कहीं से भी नहीं। वह हवाओं के साथ झूमते पत्तों की सरसराहट में है। वह पानी की सतह पर थिरकती सूर्य की किरणों में है। चलते हुए वह मेरे क़दमों की ध्वनि में है और वह मेरे दिल की घड़कन में है। वह मेरे आस-पास मौजूद सभी अनगिनत रूपों में स्वयं को प्रकट करता है।

यह बात राहत देने वाली है—है न?—कि हमारी आध्यात्मिक साधना हमेशा इस बात पर निर्भर नहीं रहती कि हमारा वातावरण हमेशा ही बिलकुल स्थिर, शान्त और निःशब्द हो। भारत के शास्त्र हमें बताते हैं कि जगत का उदय नाद के एक स्पन्द से हुआ है, आदिनाद 'ॐ' से हुआ है। हाल ही में, मैंने गुरुमाई जी से सुना कि फूल भी खिलते समय ध्वनि को प्रसरित करते हैं। इस ध्वनि की आवृत्ति इतनी सूक्ष्म होती है कि हम केवल अपने कानों से इसे सुन नहीं सकते, फिर भी यह मौजूद होती ही है। किसी न किसी स्तर पर, यह प्रतिध्वनित होती है। यह एक अद्‌भुत और प्रेरणादायक जानकारी है जिसे हम बड़े बाबा की पुण्यतिथि के अवसर पर अपने मन में बनाए रख सकते हैं, जब हम अपने संसार को देखकर यह स्मरण कर रहे हैं कि यह सब कुछ बड़े बाबा का धाम है, उनका मन्दिर है, निराकार को दिए गए असंख्य रूपाकार हैं।

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] विवेकचूडामणि, श्लोक ५६५; अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन।